हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

● वर्ष : 10 ● अंक 38 ● कानपुर, बुधवार 26 मई 2021 - पृष्ठ: 8 - मूल्य: 1.00 रू.

मई-जून का महीना मृदा जांच हेतु सर्वोत्तम- डॉ. वी.के. कनौजिया

कानपुर- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. वी.के. कनौजिया ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि मृदा जांच के लिए खेत से मृदा नमूना लेने के लिए मई का महीना सर्वोत्तम होता है उन्होंने कहा कि रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत खाली हो जाते हैं ऐसे में मृदा नमूना लेना चाहिए उन्होंने कहा कि प्रत्येक किसान भाई को अपने खेतों से मिट्टी का नमूना लेकर परीक्षण अवश्य कराना चाहिए डॉ वी.के. कनौजिया ने मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि किसी भी खाली खेत में 5 जगहों से 15 सेंटीमीटर (6 इंच) गहराई से मिट्टी का नमूना लिया जाता है सर्वप्रथम किसान भाइयों को खाली खेत में पांच- छह स्थानों पर (वी) आकार का गड्ढा खोदकर नमूना लेना चाहिए खेत के पांचों जगहों से नमूना एकत्रित करने के बाद सभी को मिलाकर समग्र (कंपोजिट) नमूना बना लेते हैं इस नमूने का ढेर बनाकर धन (+) का निशान लगाकर मिट्टी को चार भागों में बांट लेते हैं कोई भी दो भाग अपने पास रख ले तथा दो भाग हटा दें यही प्रक्रिया किसान करते रहे जब तक कि आधा किलो मिट्टी शेष न रह जाए यह मृदा नमूना पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करेगा जो आदर्श मृदा नमूना कहलाएगा अब इस आधा किलो मिट्टी को लेकर कपड़े की थैली में भरकर उसी में एक पर्ची पर किसान का नाम, पता एवं खसरा संख्या सहित तथा आगे बोई जाने वाली फसल के बारे में लिख देते हैं तत्पश्चात मिट्टी के नमूने को मृदा परीक्षण हेतु प्रयोगशाला भेजकर मिट्टी का परीक्षण करा लेते हैं मृदा परीक्षण उपरांत किसान भाइयों को उर्वरक संस्तुति पत्र (मृदा स्वास्थ्य कार्ड) प्राप्त हो जाता है जिसके आधार पर किसान भाई अपनी फसलों में उर्वरक प्रयोग करते हैं मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने बताया कि भूमि की जांच का मुख्य उद्देश मिट्टी की उर्वरता नापना तथा यह पता करना कि मिट्टी में कौन से पोषक तत्वों की कमी है व कौन से पोषक तत्व कितनी मात्रा में मृदा में उपलब्ध हैं मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि मृदा परीक्षण कराने से मृदा में उपस्थित पोषक तत्वों का सही से निर्धारण हो जाता है जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन के लिए प्रोत्साहन मिलता है डॉक्टर खान ने बताया कि प्रायः मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों के आधार पर ही फसलों का चयन करना अधिक श्रेयकर रहता है क्योंकि सभी मिट्टी सभी फसल उगाने के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं मिट्टी की जांच से स्पष्ट दिशा निर्देश मिल जाता है कि विशेष खेत में कौन सी फसल उगाई जानी चाहिए सभी फसलों के उचित बढ़वार एवं उत्पादन हेतु पीएच मान 6.50 से 7.50 सबसे उपयुक्त होता है साथ ही संतुलित उर्वरक प्रबंधन भी हो जाता है

अमर उजाला
बुधवार • 26.05.2021 05
kanpur.amarujala.com

न्यूज डायरी

इसी माह करा लें मिट्टी की जांच

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया ने मंगलवार को मृदा परीक्षण के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि मिट्टी की जांच के लिए मई का महीना सर्वोत्तम होता है। खेत में पांच जगहों से 15 सेंटीमीटर (6 इंच) गहराई से मिट्टी का नमूना लिया जाता है। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों के आधार पर ही फसलों का चयन करना बेहतर रहता है क्योंकि सभी मिट्टी सभी फसल उगाने के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं। (संवाद)

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:148 | देहरादून, मंगलवार, 25 मई, 2021 | पृष्ठ:08

मई-जून का महीना मृदा जांच को सर्वोत्तम: डॉ वीके कनौजिया

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. वी.के. कनौजिया ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि मृदा जांच के लिए खेत से मृदा नमूना लेने के लिए मई का महीना सर्वोत्तम होता है उन्होंने कहा कि रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत खाली हो जाते हैं ऐसे में मृदा नमूना लेना चाहिए उन्होंने कहा कि प्रत्येक किसान भाई को अपने खेतों से मिट्टी का नमूना लेकर परीक्षण अवश्य कराना चाहिए डॉ वी.के. कनौजिया ने मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि किसी भी खाली खेत में 5 जगहों से 15 सेंटीमीटर (6 इंच) गहराई से मिट्टी का नमूना लिया जाता है सर्वप्रथम किसान भाइयों को खाली खेत में पांच- छह स्थानों पर ट(वी) आकार का गड्ढा खोदकर नमूना लेना चाहिए खेत के पांचों जगहों से नमूना एकत्रित करने के बाद सभी को मिलाकर समग्र (कंपोजिट) नमूना बना लेते हैं इस नमूने का ढेर बनाकर धन () का निशान लगाकर मिट्टी को चार भागों में बांट लेते हैं कोई भी दो भाग अपने पास रख ले तथा दो भाग हटा दें यही प्रक्रिया किसान करते रहे जब तक कि आधा किलो मिट्टी शेष न रह जाए यह मृदा नमूना पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करेगा जो आदर्श मृदा नमूना कहलाएगा अब इस आधा

किलो मिट्टी को लेकर कपड़े की थैली में भरकर उसी में एक पर्ची पर किसान का नाम, पता एवं खसरा संख्या सहित तथा आगे बोई जाने वाली फसल के बारे में लिख देते हैं तत्पश्चात मिट्टी के नमूने को मृदा परीक्षण हेतु प्रयोगशाला भेजकर मिट्टी का परीक्षण करा लेते हैं मृदा परीक्षण उपरांत किसान भाइयों को उर्वरक संस्तुति पत्र (मृदा स्वास्थ्य कार्ड) प्राप्त हो जाता है जिसके आधार पर किसान भाई अपनी फसलों में उर्वरक प्रयोग करते हैं मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने बताया कि भूमि की जांच का मुख्य उद्देश मिट्टी की उर्वरता नापना तथा यह पता करना कि मिट्टी में कौन से पोषक तत्वों की कमी है व कौन से पोषक तत्व कितनी मात्रा में मृदा में उपलब्ध है मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि मृदा परीक्षण कराने से मृदा में उपस्थित पोषक तत्वों का सही से निर्धारण हो जाता है जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन के लिए प्रोत्साहन मिलता है डॉक्टर खान ने बताया कि प्राय: मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों के आधार पर ही फसलों का चयन करना अधिक श्रेयकर रहता है क्योंकि सभी मिट्टी सभी फसल उगाने के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं मिट्टी की जांच से स्पष्ट दिशा निर्देश मिल जाता है कि विशेष खेत में कौन सी फसल उगाई जानी चाहिए सभी फसलों के उचित बढ़वार एवं उत्पादन हेतु पीएच मान 6.50 से 7.50 सबसे उपयुक्त होता है साथ ही संतुलित उर्वरक प्रबंधन भी हो जाता है।

हिन्दुस्तान
कानपुर • बुधवार • 26 मई 2021

पहले कराएं मिट्टी की जांच, फिर करें बुआई

कानपुर। धान, दलहन या तिलहन की फसलों की बुआई से पहले मिट्टी की जांच जरूर करा लें। जांच रिपोर्ट के आधार पर वैज्ञानिकों से सलाह लें और फिर बुआई करें। इससे न सिर्फ अच्छा उत्पादन होगा बल्कि फसलों की गुणवत्ता भी अच्छी होगी। यह बात सीएसए के वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया ने कही। कहा, मई व जून माह मिट्टी की जांच के लिए सर्वोत्तम समय है। विवि के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि मिट्टी की जांच से उसमें मौजूद पोषक तत्वों की जानकारी मिल जाती है।

मई-जून का महीना मृदा जांच हेतु सर्वोत्तम : डॉ. कनौजिया

26/05/2021 राष्ट्रीय स्वरूप

कानपुर। सीएसए के अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. वी.के. कनौजिया ने किसान भाइयों को सलाह दी है। कि मृदा जांच के लिए खेत से मृदा नमूना लेने के लिए मई का महीना सर्वोत्तम होता है। उन्होंने कहा कि रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत खाली हो जाते हैं। ऐसे में मृदा नमूना लेना चाहिए।उन्होंने कहा कि प्रत्येक किसान भाई को अपने खेतों से मिट्टी का नमूना लेकर परीक्षण अवश्य कराना चाहिए।डॉ वी.के. कनौजिया ने मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया। कि किसी भी खाली खेत में 5 जगहों से 15 सेंटीमीटर (6 इंच) गहराई से मिट्टी का नमूना लिया जाता है।सर्वप्रथम किसान भाइयों को खाली खेत में पांच- छह स्थानों पर ञ्ज(वी) आकार का गड्ढा खोदकर नमूना लेना चाहिए।खेत के पांचों जगहों से नमूना एकत्रित करने के बाद सभी को मिलाकर समग्र (कंपोजिट) नमूना बना लेते हैं। इस नमूने का ढेर बनाकर धन(+) का निशान लगाकर मिट्टी को चार भागों में बांट लेते हैं। कोई भी दो भाग अपने पास रख ले तथा दो भाग हटा दें। यही प्रक्रिया किसान भाई करते रहे जब तक कि आधा किलो मिट्टी

शेष न रह जाए। यह मृदा नमूना पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करेगा जो आदर्श मृदा नमूना कहलाएगा।अब इस आधा किलो मिट्टी को लेकर कपड़े की थैली में भरकर उसी में एक पर्ची पर किसान का नाम, पता एवं खसरा संख्या सहित तथा आगे बोई जाने वाली फसल के बारे में लिख देते हैं।तत्पश्चात मिट्टी के नमूने को मृदा परीक्षण हेतु प्रयोगशाला भेजकर मिट्टी का परीक्षण करा लेते हैं। मृदा परीक्षण उपरांत किसान भाइयों को उर्वरक संस्तुति पत्र(मृदा स्वास्थ्य कार्ड) प्राप्त हो जाता है। जिसके आधार पर किसान भाई अपनी फसलों में उर्वरक प्रयोग करते हैं । मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने बताया कि भूमि की जांच का मुख्य उद्देश मिट्टी की उर्वरता नापना तथा यह पता करना कि मिट्टी में कौन से पोषक तत्वों की कमी है व कौन से पोषक तत्व कितनी मात्रा में मृदा में उपलब्ध हैं । मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि मृदा परीक्षण कराने से मृदा में उपस्थित पोषक तत्वों का सही से निर्धारण हो जाता है। जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन के लिए प्रोत्साहन मिलता है।डॉक्टर खान ने बताया कि प्राय: मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों के आधार पर ही फसलों का चयन करना अधिक श्रेयकर रहता है। क्योंकि सभी मिट्टी सभी फसल उगाने के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं।मिट्टी की जांच से स्पष्ट दिशा निर्देश मिल जाता है। कि विशेष खेत में कौन सी फसल उगाई जानी चाहिए।सभी फसलों के उचित बढ़वार एवं उत्पादन हेतु पीएच मान 6.50 से 7.50 सबसे उपयुक्त होता है। साथ ही संतुलित उर्वरक प्रबंधन भी हो जाता है।

राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • बुधवार • 26 मई • 2021

मई-जून का महीना मृदा परीक्षण के लिए सर्वोत्तम

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया ने किसानों के लिए जारी सलाह में कहा है कि खेतों की मिट्टी की जांच के लिए मृदा नमूना लेने के लिए मई-जून का महीना सर्वोत्तम होता है। रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत खाली हो जाते हैं। ऐसे में किसानों को इसी समय मृदा नमूना लेकर परीक्षण अवश्य कराना चाहिए।

डॉ. कनौजिया ने मृदा नमूना लेने की विधि के बारे में बताया कि किसी भी खाली खेत में पांच जगहों से 15 सेंटीमीटर (6 इंच) गहराई से मिट्टी का नमूना लिया जाता है। किसानों को खाली खेत में पांच छह स्थानों पर वी आकार का गड्ढा खोदकर नमूना लेना चाहिए। नमूना एकत्रित करने के बाद सभी को मिलाकर समग्र (कंपोजिट) नमूना बना लिया जाए। इस नमूने का ढेर बनाकर धन का निशान लगाकर मिट्टी को चार भागों में बांट लें। कोई भी दो भाग अपने पास रखने तथा दो भाग हटा दें। यह प्रक्रिया किसान तब तक करते रहे जब तक कि आधा किलो मिट्टी शेष न रह जाए। यह मृदा नमूना पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करेगा जो आदर्श नमूना कहलाएगा।

खेतों की मिट्टी की जांच के लिए मई-जून का महीना सर्वोत्तम। फोटो : एसएनबी

डॉ. वीके कनौजिया।

सीएसए कृषि वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया की सलाह

इसके बाद उक्त आधा किलो मिट्टी को कपड़े की थैली में भरकर उसी में एक पर्ची पर किसान का नाम एवं खसरा संख्या सहित आगे बोई जाने वाली फसल के बारे में लिखें। तत्पश्चात मिट्टी के नमूने को मृदा परीक्षण हेतु प्रयोगशाला भेजकर मिट्टी का परीक्षण कराएं। इस परीक्षण के बाद किसानों को उर्वरक संस्तुति पत्र (मृदा स्वास्थ्य कार्ड) प्राप्त होता है, जिसके आधार पर किसान अपनी फसलों में उर्वरक का प्रयोग करें।

विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक एवं प्रवक्ता डॉ. खलील खान ने बताया कि भूमि की जाँच का मुख्य उद्देश्य मिट्टी की उर्वरता नापना तथा यह पता करना है कि मिट्टी में कौन से पोषकतत्वों की कमी है व कौन से पोषकतत्व कितनी मात्रा में मृदा में उपलब्ध है। मृदा परीक्षण कराने से मिट्टी में उपस्थित पोषकतत्वों का सही से निर्धारण हो जाता है और इससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन में मदद मिलती है।

उन्होंने कहा कि मिट्टी के भौतिक और रासायनिक गुणों के आधार पर ही फसलों का चयन करना बेहतर होता है। क्योंकि सभी मिट्टी सभी फसल उगाने के लिए उपयुक्त नहीं होती है। मिट्टी की जांच से स्पष्ट दिशानिर्देश मिल जाता है कि खेत विशेष में कौन सी फसल उगाई जानी चाहिए। सभी फसलों के उचित बढ़वार एवं उत्पादन हेतु पीएच मान 6.50 से 7.50 सबसे उपयुक्त होता है।